कंचना कुमारी
अतिथि, शिक्षक, हिन्दी
यू. आर. कॉलेज, रोसड़ा

(1) आदिकाल के नामकरण की समस्या पर अपने विचार रखें।

हिन्दी साहित्य को एक व्यवस्थित स्वरूप में प्रस्तुत करने उद्देश्य से विद्वानों ने साहित्य के इतिहास को कई कालखण्डों में विभाजित किया है साहित्य के काल विभाजन के बाद अध्ययन की सुविधा को ध्यान में रखते हुए तथा तत्कालीन प्रवृत्तियों व समय के अनुरूप प्रत्येक काल-खण्ड को एक अलग नाम दिया गया। आदिकाल, भक्तिकाल, रीतिकाल व आधुनिक काल आदि।

"आदिकाल के नामकरण और उसके औचित्य" के संबंध में हिन्दी के कुछ प्रमुख आलोचकों और विद्वानों के विचार और सिद्धांत।

- शुक्ल जी ने अनेक रचनाओं को अपभ्रंश की कहकर हिन्दी के खाने से अलग कर दिया है जबकि स्वयं उनके द्वारा चुनी गई 12 रचनाओं में प्रथम 4 अपभ्रंश की ही शामिल है
- पं. चंद्रधर शर्मा गुलेरी के अनुसार "अपभ्रंश मिश्रित हिन्दी पुरानी हिन्दी है।
- राहुल सांकृत्यायन व हजारी प्रसाद द्विवेदी आदि के अनुसार 850 ई. के आस-पास उपलब्ध अपभ्रंश की मानी जाने वाली रचनाएँ, हिन्दी के आदिकाल की

Scanned with CamScanner

(2)

सामाग्री के रूप में है। इसी आधार पर सिद्ध सरहपा को हिन्दी का प्रथम कवि माना है।

विभिन्न विद्वानों द्वारा दिए गए नाम और उनका औचित्य :-

हिन्दी साहित्य के प्रथम पड़ाव अर्थात आदिकाल को विभिन्न विद्वानों द्वारा कई अलग-अलग नामों से अभिहित किया गया है। आदिकाल के नामकरण के संबंध में कुछ प्रमुख विद्वानों के मत निम्नानुसार है

(1) आचार्य शुक्ल :- वीरगाथाओं की प्रचुरता और लोकप्रियता के आधार पर "वीरगाथा काल" नाम दिया।

(2) डॉ. हजारी प्रसाद द्विवेदी जी के अनुसार वीरगाथा नाम के लिए कई अपवाद सर्व महत्वपूर्ण और लोकप्रिय नहीं है तथा कइयों की प्रामाणिकता, समयसीमा आदि विवादित है अतः "आदिकाल" नाम ही उचित है क्योंकि साहित्य की दृष्टि से यह काल अपभ्रंश काल का विकास ही है।

Scanned with CamScanner

③

(3) रामकुमार वर्मा :- रामकुमार वर्मा ने इसे "चारण काल" कहा। उनके अनुसार इस काल के अधिकांश कवि चारण अर्थात राजदरबारों के आश्रय में रहने वाले व सम्राटों का यशोगान करने वाले ही थे।

• महावीर प्रसाद द्विवेदी :- आरम्भिक अवस्था या कहें कि हिन्दी साहित्य के बीज बोने की समयावधि के आधार पर महावीर प्रसाद द्विवेदी जी ने इस काल को "बीज-वपन काल" कहा। वैसे यह नाम भी आदिकाल द्योतक है।

• राहुल सांकृत्यायन :- सिद्धसामंत युग उनके अनुसार 8वीं से 13वीं शताब्दी के काव्य में दो प्रवृत्तियाँ प्रमुख हैं — 1. सिद्धों की वाणी - इसके अंतर्गत बौद्ध तथा नाथ-सिद्धों की तथा जैन मुनियों की उपदेशमूलक तथा हठयोग से संबंधित रचनाएँ हैं
2. सामंतों की स्तुति - इसके अंतर्गत चारण कवियों के चरित काव्य (रासो ग्रंथ) आते हैं।

• चंद्रधर शर्मा गुलेरी :- गुलेरी जी ने अपभ्रंश और पुरानी हिन्दी को एक ही माना है तथा भाषा की दृष्टि से अपभ्रंश का समय होने का कारण उन्होंने

(4)

इसे "अपभ्रंश काल" का संज्ञा दी है।

निष्कर्ष :- हिन्दी साहित्य के प्रथम सोपान का नामकरण या कहें कि आदिकाल के नामकरण की समस्या पर अनेक विद्वानों ने अलग-अलग तर्कों व साक्ष्यों के आधार पर अपने-अपने मतानुसार किया है शुक्ल जी द्वारा प्रदत्त नाम का ही संक्षिप्त और सारगर्भित रूप है काशी नागरी प्रचारिणी सभा द्वारा प्रकाशित "हिन्दी साहित्य का बृहद इतिहास" में अनेक ऊहापोह के बाद "वीरगाथा काल" नाम को ही उचित माना गया अतः जब तक कोई निर्विवादित रूप से स्वीकार्य और प्रचलित नाम नहीं आता तब तक 'वीरगाथाकाल' को ही मानना समीचीन होगा।

Scanned with CamScanner